पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज

महादेव की याचना

1. ओ३म् ओ३म् मातु रशी विरक्षणाः माणन् ता जसो गृता वर्तन् तीरर्णो आप्या नरोति मानम् रजो यज्ञन् नमः सम भागाः मनो तृता दघाः।
2. ओ३म् भूर्णान् ते पुनाः यज्ञन् नमो प्रवानि वर्णो यज्ञन् नमः गायत्राणि मानम् प्रजापते इदम् माना देवम् नमोति वर्धा ना नाः३म्।
3. ओ३म् ददत्रणो ग्रीवा गृ नमोः याज्ञा गृ वर्तो नानम् रेधि मया गृता यज्ञन् नमा गेते ददना ग्रहणा नी मया मानाः देवा माणम् पुनाः।
4. ओ३म् मयश्वताम् ब्राजी रुषणा ऋषि मानम् त्रि वजो यदच्चतौ रथि वर्णो माणम् प्रागृ वर्तो माणा शन्न नमोति वागृ नमोः रेवा मयन्त्वा माणाः३म्।

5. ओ३म् ओ३म् गृता क्रत प्रची वर्णो मदा मदुक्षणो त्रिवा काम द्यौ गणम् ब्रा ब्रजा स्वति ग्रहणा आ पा मना मनस्वता देवम् रेधि मानाः३म्।

6. ओ३म् खण्डा त्रि रडनश्चनो रिडेनान्त्वा मनो सम भागाः माणम् आजी वस्याणौ कादी वन्नगा वनुम्रो तन्भगा वेते मानाम् मयन्त्वा भमा गर्भा धन यदन् नमो त्रिवर्धा केतु मया माणः३म्।

7. ओ३म् ब्रतच्चतम् ब्रूषणम् मघा रथी वणाति माता मनु दशो१ गृताः आभूरि तन्नो त्रिवर्धा माणम् त्रिपादा चतुष्पदा हिवना माहन्त्वा रेधि मयाः।

8. ओ३म् तनुः ग्रहताः यदिस्व प्रधी रणम् रणोति कामाः वेते मया माणम् भवे भवेषणम् मघा यदो यदि मणा यदो यनिकृगृता यणम् पृथ्वी शणा मध्याः नमो आ पा मयाति रे रे माणाः३म्।

9. ओ३म् ओ३म् मया नमम् प्रीधि हारयो सम मा भू घृति वजो यणाहम् रतो यणाहम् रतो माणम् रेवो शनाः हन्त्वा कामाः का वर्धो केतु मया मानम् पुनागृहिणाति यन्नो धामा केतु माणम् प्रजापते योतु माणाः माणाः३म्।

10. ओ३म् तन्गाताः मन्गवृते सतो माणान् निघाति त्रि जिषम् भागा मणा ब्रह्म चरिष्यणो चरिष्यामि पुनाः धामा वेतु मयाः।

11. ओ३म् वणा गृहणेति माणम् प्रा शनश्चमा गृतोहि देवाः रेधि माणी पागा पाग ग्राणी मातीनो शुन्धानि यज्ञो१ ग्रहणानि शुन्धानि माणम् मधो१ गृतोनि शुन्धानि रेधि माणाः३म्।

12. ओ३म् पुनश्चतम् शणा यदजूहूयदि युहूयदि चणा यज्ञनन् नागा मनग वर्तो गे केतु पुनानान्त्वा देवम् सम मा गा सम मा गा मनो२ वर्ताति सन्तागृ वर्णोति माणम्।

13. ओ३म् ओ३म् धोक्षणा रेतुम् मनो लुन्तर मसति उषचा रथाभिः यन् नाणि रथानि यन् नाणि रेवति मा जप्छन्दः ग्राहता कात्माः कात्माः यनि ता गृणोति यणो यज्ञाः मनाः पुनाः देवम् पुनश्चाग्री वर्तो ते मानाः।

14. ओ३म् यननी सुशमणि कत्रवर्तो ऋतोधा गाता ऋषि मनाः कारम्भो चक्ष्म मधनम् मग्नम् प्रा जन्माः माता शिवा शिणम् भा भा गाः मनोः३ देवेभ्यो नमोः सम्भागाः३म्।

15. ओ३म् ब्रह्म मणोति देवम् दधातु नः नमस्ते सतेते सतेते नमस्ते नमोभि नमाः स्वाहा।

16. ओ३म् यनमा शनम् प्राधि वर्ताः ऋषि मानम् देवाः मना यज्ञश्वनाति देवाः रेधि मानाः।

17. ओ३म् शनाश्वते पुनाः वर्णोति मानम् भगा शनम् यज्ञो यज्ञो शज्ञनम् मानम् जनाः ग्रता भाना वेतु मा हा।

18. ओ३म् ऋषि माणम् प्राजनम गर्तो देवाः सम्भागाः मना देवम् रजा शन्नो वर्तो मानम् भगा वर्तो तीरि सम महा ग्रहणा वर्तो माणम् मयाः।

19. ओ३म् सर्वश्वती ईशत गृहि मोधा माह वर्धाश्वते मानम् प्रांशीशणा प्रा वर्तो मानम् भागाः।

20. ओ३म् तनु कायरी नोति देवाः माना कस्मश्वते ऋषि मानम् देवाः।

21. ओ३म् ब्रह्म मणाति देवम् दधातु नः नमस्ते सतेते सतेते नमस्ते नमो नमाः स्वाहा।

व्याख्याःश्रृङ्गी ऋषि कृष्ण दत्त जी महाराज

देखो, मुनिवरों! अभी अभी हमारा पर्ययण समय समाप्त हुआ। आज हम तुम्हारे समक्ष पुनः की भान्ति कुछ वेदमन्त्रों का पाठ कर रहे थे ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, जिन वेदमन्त्रों का अभी अभी हमने तुम्हारे समक्ष, पाठ किया। आज के वेद पाठ में उस देव की याचना कर रहे थे जो देवों का **महादेव** है। जिस **महादेव** के लिए ऋषि मुनियों ने और देवताओं ने भी इसी **महादेव** की याचना की। आज हम पुनः से उस परमपिता परमात्मा की अनुपम कृपा से, आज हम **महादेव**, देवो के देव की याचना करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था। आज हम अपने भाग्य को सराहना देते चले गए। जिस जीवन में परमात्मा के गान गाने का अवसर प्राप्त होता हो वह जीवन बड़ा अमूल्य है। वह जीवन बड़ा अमूल्य है और वह कितना अमूल्य है। वह इतना अमूल्य है कि उसकी महिमा का गुणगान नही गाया जा सकता।
मुनिवरों! ईश्वर का गान, उस **महादेव** का गान हम कौन से जीवन में गा सकते हैं? कौनसा जीवन ऐसा है, जिसमें हम **महादेव** की याचना कर सकें और उसके विज्ञान की चर्चाएँ कर सके वह कौनसा जीवन है, वह परमात्मा ने कौनसा जीवन दिया है। जो देवताओं ने भी जिस जीवन की याचना की है, वह है मनुष्य। वह जीवन है मनुष्य, जिसकी याचना हमारे आचार्यों ने पुनः पुनः की है, ऋषियों और महर्षियों ने देवता बनने के लिए **महादेव** से याचना की है कि हमें मनुष्य बना। और कैसा मनुष्य बना? मनुष्य बनाना है, तो हमें आर्य बना, हमें श्रेष्ठ पुरूष बना। हम यथार्थ का पालन करने वाले बनें। जैसा मैने द्वितीय वाक्यों में आर्यों की व्याख्या

प्रारम्भ होती चली जा रही है। आर्यों की व्याख्या आज भी मैं करता चला जाँऊ। मुझे आर्यों का जीवन बड़ा अमूल्य प्रतीत होता है, उनका जीवन संसार में परोपकार करने के लिए होता है, उनका जीवन संसार में वास्तविकता को फैलाने के लिए होता है। वे अपने ज्ञान विज्ञान का प्रसार करके यहां से चले जाते हैं। मुनिवरों! नारद मुनि महाराज ने आर्यों की व्याख्या करते हुए कहा था कि आज मैं आर्यों की व्याख्या नहीं कर सकता क्योंकि आर्य इतने श्रेष्ठ होते हैं। सृष्टि का जब प्रारम्भ हुआ सृष्टि के प्रारम्भ में आर्य यहां आये। सृष्टि के प्रारम्भ से आर्य आते चले आए हैं। जो दूसरों को कष्ट न देने वाले हों, उनको आर्य कहते हैं। यह आर्य परम्परा से यहां आए हैं और इन्हीं ने सृष्टि का निर्माण किया है। इन्हीं का यज्ञ इतना महान है। इन्हीं के विज्ञान से यह सर्व संसार उत्पन्न हुआ। तो मुनिवरों! यह महान आर्यों की परम्परो को, मैं आर्यों की परम्परा बहुत समय से गाता चला जा रहा हूँ।

मुनिवरों! आज मुझे **महादेव** की याचना करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। **महादेव** जो देवों के भी देव हैं। जो महान हैं, जिसकी याचना देवताजन भी किया करते हैं। मुनिवरों! त्रेता के काल में भगवान राम ने वशिष्ठ मुनि महाराज से प्रश्न किया कि भगवन! **महादेव** कौन हैं? हम **महादेव** किसको माने? उस समय महाराजा वशिष्ठ मुनि ने कहा था राम! यह जो **महादेव** है, यह देवों के देव हैं, यह हम इसके महाऋणी है, क्योंकि यह देव है, देता है और यह क्या देता है यह हमें वह सामग्री देता है जो कहीं भी प्राप्त नहीं होती है। उस सामग्री को देता है, **महादेव**। राम ने कहा कि महाराज! वह कौन सी सामग्री है? जो **महादेव** देता है हमें। उन्होंने कहा था कि वह सामग्री वायु है, वह सामग्री अग्नि है, वह अन्तरिक्ष है, वह पृथ्वी है, जल है, यह सब सामग्री उस विधाता की देन है। जो मनुष्य के हृदय में ओत प्रोत

हो रही है। जो मुनिवरों! देखो, मनुष्य का जीवन सञ्चार होता है, इन्ही से। खानपान की सामग्री आती है, पृथ्वी से, यह पृथ्वी उस परम **महादेव** की देन है। इस पृथ्वी पर हम सभी स्थापित हो करके और हम उसके विज्ञान का उस महिमा का गुणगान गाते हैंआज हम उस पृथ्वी की गोद में जा करके हम उन वनस्पतियों को पाते है उस विज्ञान को पाते है जिस विज्ञान से देखो, हमारे जीवन का विकास हो जाता है। अहा देखो, यह उस **महादेव** ने हमें देन दी है जहां एक एक वस्तु इस प्रकार की है कि मानव चकित हो जाता है मुनिवरों!।

मुनिवरों! और मानव यथार्थता का जब पान करता है। विचार आता है, इस विज्ञान का प्रसार करता है, मनुष्य देखता है, कि परमात्मा उस **महादेव** ने यह ज्ञान दिया है। **महादेव** ने यह हमें सब सामग्री दी हैं। अपने जीवन में धारण करने के लिए, अपने जीवन को ऊँचा बनाने के लिए, हमें श्रेष्ठ बनाने के परमात्मा ने सामग्री दी है।

आज हम देखो, इसके पश्चात वह कितना ऊँचा **महादेव** है, क्या एक यही सामग्री नही दी, उस **महादेव** ने वह सामग्री दी है मुनिवरों! कौन सी सामग्री दी है? वेद है हमारे द्वारा। आज वह सामग्री ज्ञान है ज्ञान से अपने जीवन का प्रसार, जीवन को ऊँचा बनाते है वह सामग्री कहां से जानी जाती है? यह प्रकाश से जानी जाती है। प्रकाश कौनसा है? वह प्रकाश हमारे द्वारा वेद। वेद कहते हैं प्रकाश को। उस परमात्मा ने हमें यह प्रकाश दिया है और इसी प्रकाश के आधार पर हम सर्वत्र सृष्टि को जानने वाले बन जाते है। इसी प्रकाश से हम भौतिक विज्ञान को जानते हैं और इसी प्रकाश से हम देखो, आध्यात्मिक विज्ञान को जानते हैं। इसी प्रकाश को ग्रहण करके हम संसार का भौतिक और आध्यात्मिक सर्वशः ज्ञान हमें प्राप्त हो

जाता है। मुनिवरों! यह कौनसा प्रकाश है, वेद रूपी प्रकाश है, यह वेद रूपी माता है। कौन सी माता है? वेद माता, जिस वेद माता के गर्भ में जाने के पश्चात हम महान बन जाते हैं। जिस गायत्री के गर्भ में जाने के पश्चात हम महान बन जाते हैं, वह विचित्र बन जाते हैं। तो मुनिवरों! वह हमारे द्वारा कौन है वह हमारे द्वारा प्रकाश है। आज हमें प्रकाश को पाने के लिए क्या करना पड़ेगा।

आज हमें कौन सा कर्तव्य करने की आवश्यकता है। जो हम प्रकाश को पा सकेंगे? मुनिवरों! वह हमारे द्वारा क्या है? आर्य बनना है। हम आर्य बनें। आर्य हम वेद के आधार को लेकर बन सकते हैं, प्रकाश को ले करके। जो प्रकाश में चलने वाला हो उसको आर्य कहते हैं और जो अन्धकार में चलने वाला होता है मुनिवरों! उसको अनार्य कहते हैं। आज मैने इसकी व्याख्या पूर्व काल में भी की है। आज मैं पुनः से करता चला जाँऊ। मैने पुनः काल में कहा है कि आर्य हों तो यहां भगवान राम जैसे आर्य हों, आर्य हो तो यहां महाराजा काग भुषुण्डी जैसे आर्य हो, यहां आर्य बनना हो तो मुनिवरों! नारद मुनि जैसे जिन्होने लोक लोकान्तरों से कहा, यहां आर्य बनना है तो मुनिवरों! माता गार्गी, अभ्यती मुनि महाराज और भी नाना आचार्य हुए जिन्होंने आर्यों की पताका को संसार में फहराया। मुनिवरों! देखो, आज से पूर्व काल में इसकी व्याख्या की भी है आज भी मैं देता चला जाँऊ आज भी इसका कुछ प्रकाश देता चला जाँऊ। मुनिवरों! देखो, आज हम उस प्रकाश के आधार पर चलें जिससे हम भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान सबको जान सकें।

परन्तु मेरे पूज्यपाद गरुदेव ने यह कहा है इस सम्बन्ध में यह कहा है कि यह जो शब्द है, यह अनादि है। परन्तु देखो, यह प्रकृति में बीज रूप से रहता है, जैसे वृक्षो का इसमे देखो, जैसे वट वृक्ष है वट वृक्ष का, एक सूक्ष्म से अङ्कुर में इतने

बड़े वट वृक्ष का विज्ञान होता है, इतना विशाल वट वृक्ष रहता है। इसी प्रकार समाप्त हो जाने के पश्चात सबका सूक्ष्म रूप होकर उस महान प्रकृति में रमण करता है। अङ्कुर रूप से रमण न करता है तो मुनिवरों! देखो, आज यदि अङ्कुर रूप से रमण न करता तो सब कुछ कैसे रहता? मानो यह उपादान कारण से और मानो देखो, सामान्य से जब यह उत्पन्न होता है इसी प्रकार उत्पन्न होता है पूर्व से विराजमान है। जैसे मुनिवरों! देखो, जैसे मनुष्य की आत्मा के द्वारा ज्ञान और प्रयत्न दोनों ही स्वाभाविक हैं। दोनों स्वाभाविक है, परन्तु उनका अङ्कुर है, इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, आज कह सकते है गौरव के साथ हमारे आचार्यों ने इस वाक् को कहा है कि यह वाक् यथार्थ हो सकता है।

परन्तु आज हम बेटा! हम व्याख्यान देते देते बहुत दूर चले गए हैं। व्याख्यान तो हमारा **महादेव** के सम्बन्ध से चल रहा था हम उच्चारण करते करते कितनी दूर चले गए हैं। आज हम **महादेव** की याचना करने जा रहे थे।

हे **महादेव!** आज देवता तेरी पूजा किया करते हैं। तू वास्तव में **महादेव** है तू वास्तव में लिंग स्वरूप है। भगवन! जब सृष्टि प्रारम्भ होती है, यह संसार लिंग रूपों से उत्पन्न होता है। जब लिंग रूप से उत्पन्न होता है, तो यह आप के महत की कृपा है यह आपके विज्ञान की कृपा है। क्या छह माह में लोक लोकान्तर रच जाते हैं। हे प्रभु! हे **महादेव!** तू वास्तव में **महादेव** है। देवों का भी देव है। आज हम तेरी पूजा करने जा रहे हैं। तू वास्तव में हमारे जीवन का साथी है। हे प्रभु! हे **महादेव!** हे कल्याण करने वाले हे महा! हे महा आनन्द को प्रदान करने वाले तू वास्तव में **महादेव** है। हमारा कल्याण करने वाला है तू हमारा कल्याण कर, आज हम अपने कल्याण की जिज्ञासा लेकर आपके समक्ष आए हैं।

हे प्रभु! हे प्रभु! आपको देवों का देव कहा है। क्यों कहा है? कौन से देवताओं ने आपको अपना महा देव चुना है और चुनौती दी है जो महान देखो, मनुष्यो के लिए देवता है, जैसे बुद्धिमान है, बुद्धिमान देखो, महान आत्माएं, महान आत्माएं, संसार में मनुष्यों का कल्याण करने के लिए आती हैं, और उपदेश देकर यहां से समाप्त हो जाती हैं, चले जाते है। उन आचार्यों ने भी उन देवताओं ने भी उस महादेव को अपना देव चुना है। और उसको चुनौती दी है आज हमे उस महादेव की शरण में जाना है। परन्तु प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक देव कन्याओं को उस महादेव की शरण में जाना हैं। आज मुनिवरों! देखो, उस महादेव की व्याख्या करते हुए देवर्षि नारद मुनि महाराज ने कहा है कि वह जो महादेव है वह कल्याण करने वाला हैं। सृष्टि को नियन्त्रण में करने वाला हैं, आज देखो, जो सृष्टि को नियन्त्रण में करने वाला हो और देवताओं पर अनुगृम करने वाला है, उसको महादेव कहा गया है वह वास्तव में महादेव है। देवताओं का भी देव है। मुनिवरों! देखो, नारद मुनि ने यह भी कहा है कि महान जो धर्मज्ञो की स्थिति का रूपान्तर करने वाला है, वह भी महादेव है मानो जो देवताओ को आज्ञा देने वाला है वह भी महादेव है मुनिवरों! देखो, परमात्मा को भिन्न भिन्न रूपों से पुकारा है। उसको महादेव की चुनौती वास्तव में दी है आज हम महादेव को चुनौती देते चले जाएं। आज महादेव की याचना करते चले जाएं, जो महादेव है, महामहा नमो स्तुति उत्तम भवता जो अहा! देखो, लोक लोकान्तरों को रचने वाला, इनमें रमण करने वाला, और सृष्टि को नियन्त्रण में करने वाला है। उसको महा कहते है महादेव कहते है।

हे परमदेव! आ! हमारा कल्याण करने वाले आ। तू कल्याण करता है, तू हमारा कल्याण कर। हम तेरे से याचना करने जा रहे हैं। आज तू हमारी याचना स्वीकार

कर। आज तू देव है परन्तु देव न होता आज हम तेरी याचना न करते, आज हम तेरी शरण में नही आते परन्तु देखो, हमने विज्ञान से अच्छी प्रकार देखा है। आज मुनिवरों! देखो, आज अपने पूज्यपाद गुरुदेव की कृपा से नास्तिक हो करके भी देखा है, परन्तु उसमें कुछ न मिला। अन्त में उस **महादेव** की शरण में जाना ही पड़ा। जो **महादेव** है, आज मुनिवरों! देखो, नास्तविकत्व यह कह रहा है, जिस **महादेव** की हम याचना करते चले जा रहे हैं जिसे **महादेव** पुकारा जा रहा है, परन्तु वह **महादेव** क्या पदार्थ है। वह क्या है मुनिवरों! देखो, इसको आज आत्मा से विचारा जाएगा जाना जाएगा। आत्मा ऐसा पदार्थ नहीं कि आज तुम्हारे समक्ष इसका निर्णय करा दूँ, परन्तु समक्ष देखना है तो पूर्व तू अपने को जान और अपने को देख कि मैं कौन हूँ और कैसा हूँ। मैं आज जब मैं अपने नेत्रों को नहीं देख सकता, तो उस प्रभु को कैसे देख सकता है। बिना विज्ञान के, बिना प्रकाश के, जब मेरे में इतना प्रकाश नहीं कि आज मैं अपने नेत्रों को तो देख सकूं, परन्तु आज हम उस **महादेव** को देखना चाहते हैं? बेटा! **महादेव** तो उस महा अनुपम की कृपा से देखा जाएगा। जब आत्मिक बल बढ़ जाएगा, जब महानता बढ़ जाएगी, विज्ञान के शिखर पर पहुंचेंगे, आध्यात्मिक विज्ञान के शिखर पर पहुचेंगे।

विज्ञान को बहुत महानो ने जाना है, महानुभवों ने जाना है आध्यात्मिक विज्ञान को तो बेटा! संसार में कोई कोई जाना करता है। कोई कोई आध्यात्म विज्ञान के शिखर पर पंहुचता है, कोई कोई जानता है, कोई कोई देखता है कि यह प्रकाश कैसा है, इस प्रकाश की महिमा कैसी है, उस प्रकाश के प्राप्त होने पर हम कैसे बन जाते है वेद रूपी प्रकाश को पान करके हम वास्तव में देवता बन जाते है और

जो हम उस सोम का पान कर लेते है, और मुग्ध हो करके उस परमात्मा की गोद में जा स्थिर होते हैं मुनिवरों! जो संसार को रचयिता है **महादेव** है अहा!।

जितेन्द्र बंसल